श्री नागार्जुन
Shri Nagarjun

श्री नागार्जुन, जिन्हें साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान कर रही है, हिन्दी और मैथिली दोनों भाषाओं में हमारे समय के सर्वाधिक प्रतिष्ठित कवियों में हैं।

वस्तुत: वैद्यनाथ मिश्र ने 'नागार्जुन' नाम का वरण अपने जीवन-काल के बौद्ध चरण में किया, जब 1936 में वे श्रीलंका के विद्यालंकार परिवेण में पालि और बौद्ध दर्शन के आचार्य एवं प्रशिक्षु के रूप में गए। तभी से वे अपने हिन्दी पाठकों की कई पीढ़ियों के 'बाबा नागार्जुन' हैं, वैसे ही जैसे अपने मैथिली पाठकों के लिए वे 'यात्री' हैं।

उनका जन्म 1911 में ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन बिहार के मधुबनी जिले के सतलखा गाँव में हुआ, जो उनके पैतृक गाँव तरौनी (जिला दरभंगा) से बहुत दूर नहीं है और बावजूद उनके दुर्निवार घुमक्कड़ी के, गाँव से उनके सम्बन्ध-सूत्र कभी कमज़ोर नहीं पड़े। 1934 से 1941 तक साधुओं का जीवन जीते हुए वे बिहार से पंजाब, राजस्थान, हिमाचल, गुजरात और देश के दूसरे भागों में घूमते रहे। अपने लंका-प्रवास के पश्चात् वे तत्कालीन बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित अनुसंधानकर्ताओं के एक दल के साथ ल्हासा (तिब्बत) गए। यहीं से वे राहुल सांकृत्यायन के निकट सम्पर्क में आए। 1939 में वे स्वामी सहजानन्द सरस्वती के नेतृत्व में बिहार में चल रहे किसान आंदोलन में भाग लेने के लिए लौटे और उन्होंने छपरा और हजारीबाग जेल में 10 माह बिताए। इसके तुरंत बाद वे हिमालय और पश्चिमी तिब्बत के जंगली इलाकों में भ्रमण के लिए निकल पड़े। 1941 में लौटने पर वे दूसरे किसान नेताओं के साथ भागलपुर केन्द्रीय कारागार में देखे गए। इसी दौर में वे गृहस्थाश्रम में भी लौटे। उनकी अगली जेल यात्राएँ 1948 तथा 1974 में हुई; 1948 में गाँधी जी की हत्या पर लिखी कविताओं के कारण, जिन्हें प्रतिबंधित भी कर दिया गया था, और 1974 में जय प्रकाश नारायण के 'सम्पूर्ण क्रांति' आंदोलन में भाग लेने के कारण।

यात्रा—भौगोलिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, यहाँ तक कि राजनीतिक भी—नागार्जुन के व्यक्तित्व का अटूट अंग है। आज भी वे निरंतर भ्रमण करते रहते हैं और उनके प्रशंसकों में युवतर पीढ़ी के असंख्य लोग हैं। मूलत: वे एक अथक अन्वेषी हैं, सच की तलाश में निरंतर जुटे हुए। यह तलाश अवाम के हित-साधन से जुड़ी हुई है, और दशकों तक साम्यवादी सहित विभिन्न राजनीतिक संगठनों एवं आंदोलनों के साथ उनके जुड़ाव और अलगाव की घटनाएँ इससे समझी जा सकती हैं।

अपने कार्य-जीवन के प्रारम्भ में नागार्जुन ने पंजाब में एक पत्रिका *दीपक* का सम्पादन किया, श्रीलंका में एक अध्यापक के रूप में काम

Shri Nagarjun, on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship, is one of the most distinguished poets of our time, writing both in Hindi and Maithili.

"Nagarjun", in fact, is the name adopted by Vaidyanath Mishra in his Buddhist phase when he went to Vidyalankar Parivena in Sri Lanka as a pupil-teacher of Pali and Buddhist philosophy in 1936. Ever since, he is "Baba Nagarjuna" to several generations of his Hindi readers, just as he is "Yatri" (Traveller) to his Maithili readers.

He was born on the *Jyeshtha Poornima* of the year 1911 in the village Satlakha (Madhubani), not too far from his ancestral village, Tarauni (Darbhanga), in the state of Bihar with which his links have never weakened despite his irresistible wanderlust. From 1934 to 1941, he led a monk's life, moving from Bihar to Punjab, Rajasthan, Himachal, Gujarat and other parts of the country. After his Sinhalese sojourn, he went to Lhasa (Tibet) with a group of researchers sponsored by the then Bihar Government, which brought him closer to Rahul Sankrityayan. He returned to join the peasants' struggle in Bihar in 1939 led by Swami Sahajanand Saraswati and spent 10 months in the prisons of Chhapra and Hazaribagh. Soon after, he left on a wild tour of the Himalayas and western Tibet, only to return and land up in the Bhagalpur Central Jail in 1941 along with other peasant leaders. He also returned to the *grihastha-ashram* around this time. His next journeys to the prison took place in 1948 for his poems written on the assassination of Gandhi, which were also banned, and in 1974 during Jaya Prakash Narayan's movement for "Total Revolution".

Travel—geographical, spiritual, intellectual, as well as political—is an inseparable part of Nagarjun's identity. Even today he is constantly on the move, and has his admirers amongst the youngest generation. He is basically a restless explorer, constantly in search of truth. This exploration is firmly wedded to the cause of the people which would seem to explain his association and dissociation with various political formations and movements, including the communistic ones over the decades.

In his early years, Nagarjun has edited a journal, *Deepak*,

किया और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के सम्पादकीय विभाग में कार्यरत रहे, हालाँकि अधिकांश समय वे एक उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, समालोचक और समाचारपत्र में स्तम्भ लेखक के रूप में काम करते रहे। कवि तो वे हैं हीं - उन्होंने हिन्दी और मैथिली के अतिरिक्त बाङ्ला और संस्कृत में भी कविताएँ लिखीं हैं।

उनकी पहली कविता 1935 में लाहौर के *विश्वबंधु* साप्ताहिक में प्रकाशित हुई और पहला संकलन *युगधारा* 1953 में। इसके पश्चात् उनके अनेक प्रसिद्ध कविता-संकलन प्रकाशित हुए: *सतरंगे पंखों वाली* (1959), *प्यासी पथरायी आँखें* (1962), *तालाब की मछलियाँ* (1975), *तुमने कहा था* (1980), *खिचड़ी विप्लव देखा हमने* (1980), *हज़ार हज़ार बाँहों वाली* (1981), *पुरानी जूतियों का कोरस* (1983), *रत्नगर्भा* (1984), *ऐसे भी हम क्या, ऐसे भी तुम क्या* (1985), *आख़िर ऐसा क्या कह दिया मैंने* (1986) और *इस गुब्बारे की छाया में* (1989)। इसके अतिरिक्त दो प्रबंध काव्य *भस्मासुर* (1971) और *भूमिजा* (1993) भी प्रकाशित हैं।

अपने असंख्य पाठकों के लिए नागार्जुन तीव्र और पारदर्शी संवेदनाओं के कवि हैं, जो अपने परिवेश और काल के कठिन सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों से पूरी तरह परिचित हैं, चाहे वे मुद्दे स्थानीय हों, राष्ट्रीय हों या वैश्विक हों। उनकी कुछ प्रेम कविताएँ, तथा अकाल और कालिदास पर लिखी कविताएँ आधुनिक हिन्दी साहित्य की 'क्लासिक' हो गई हैं। काव्यशास्त्र और छंदादि विधानों, भाषा के खाँटी मुहावरे और विभिन्न भाषिक स्तरों-शैलियों पर अपने पूर्ण अधिकार के लिए आप विख्यात हैं; बोली-ठोली से लेकर परम अभिजात रूपों तक भाषा के तमाम रंग-रूप आप सहज ही समेट लेते हैं। मानवता के प्रति गहरी चिन्ता और निष्ठा इस जनकवि को तरह-तरह की अभिव्यक्तियों और मिज़ाजों का कवि बना देती है: कड़वा, क्रोधी, व्यंगात्मक, प्रशंसात्मक, प्रयोगात्मक आदि-आदि हर तरह का मिज़ाज आप में मिलता है। प्राचीन मिथक और शास्त्र आपके लिए उतने ही सुगम्य हैं जितने कि वर्तमान समय में ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले नवाचार। इस वय में भी उनकी खोजी आँखें कोई भी महत्वपूर्ण और सुंदर वस्तु पहचानने में शायद ही चूकती हों। नवलेखन के सम्भवत: सबसे अच्छे पाठक नागार्जुन हैं।

कविता के अतिरिक्त नागार्जुन ने कुछ अलग तरह के उपन्यास लिखे हैं जो मिथिला क्षेत्र और उसकी भाषा पर केन्द्रित हैं। अपने साहसिक प्रयोग के लिए वे विवादास्पद भी रहे हैं। उनके द्वारा लिखित बारह उपन्यासों में *रतिनाथ की चाची* (1948), *बलचनमा* (1952), *बाबा बटेसरनाथ* (1954), *वरुण के बेटे* (1957) और *दुखमोचन* (1957) चर्चित रहे हैं। *अयोध्या का राजा* और *बम भोलेनाथ* जैसे उनके निबंध-संग्रह, निराला और प्रेमचंद पर उनके विनिबंध, प्रभूत बाल साहित्य, 'गीत गोविन्द', 'मेघदूत', विद्यापति की रचनाओं और बाङ्ला तथा गुजराती की कुछ पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद इस बहुमुखी प्रतिभा के दूसरों पक्षों को उजागर करते हैं।

उनकी अन्य कृतियों में संस्कृत में लिखित *धर्मलोक शतकम* (सिंहली लिपि में प्रकाशित एक लम्बी संस्कृत कविता), *देश दशकम* आदि हैं। मैथिली में लिखित पारो, बलचनमा, *नवतुरिया* (उपन्यास) और *चित्रा* (1949) तथा *पत्रहीन नग्न गाछ* (1967) काव्य-संग्रह उल्लेख्य हैं। उनकी कुछ बाङ्ला कविताएँ उनकी *चुनी हुई रचनाएँ* में संकलित हैं जो

in Punjab, has worked as a teacher in Srilanka and in the editorial department of Rashtra Bhasha Prachar Samiti, Wardha, though most of the time he has been a writer of novels, short stories, essays, criticism, newspaper columns and, of course, poetry which he also writes in Bengali and Sanskrit.

His first Hindi poem was published in 1935 in the Weekly *Vishwabandhu*, Lahore, and the first collection *Yugdhara* in 1953. It was followed by other highly acclaimed collections, namely, *Satarange Pankhon Wali* (1959), *Pyasi Patharai Aankhen* (1962), *Talab Ki Machaliyan* (1975), *Tumne Kaha Tha* (1980), *Khichari Viplav Dekha Hamne* (1980), *Hazar Hazar Bahon Wali* (1981), *Purani Jootiyon Ka Koras* (1983), *Ratna Garbha* (1984), *Aise Bhi Ham Kya, Aise Bhi Tum Kya* (1985), *Aakhir Aisa Kya Kah Diya Maine* (1986) and *Is Gubbare Ki Chhaya Mein* (1989). Besides, there are the two narrative poems, *Bhasmankur* (1971) and *Bhumija* (1993) of his which are held in high esteem.

To his innumerable admirers, Nagarjun is a poet of intense and transparent feelings, keenly aware of the surroundings and crucial socio-political issues of the time, whether they are local, national, or global. Some of his love poems, poems on drought, and on Kalidasa are already the classics of the modern Hindi literature. He is known for his superb command over prosody and the idiom and the various 'registers' of the language, encompassing the colloquial and the most 'refined' or 'sophisticated'. It is his deep concern for humaneness which makes this "Bard of the People", the *Jankavi*, a poet of multifarious voices and moods: bitter, angry, satirical, laudatory, lyrical and so on. Ancient lores and the *shastras* come to him as easily as the latest developments in the various fields of the day. His watchful eye, even at this age, seldom misses anything of significance or beauty. He is perhaps the keenest reader of the new writing.

Apart from poetry, Nagarjun has written some pathbreaking novels focussing on the Mithila region and its language, which also raised controversies over their bold non-conformism. *Ratinath Ki Chachi* (1948), *Balchanama* (1952), *Baba Batesharnath* (1954), *Varun Ke Bete* (1957), and *Dukhmochan* (1957) are the better-known of his 12 novels. His collection of essays, such as *Ayodhya Ka Raja* and *Bam Bholenath*, his monographs on Nirala and Premchand, his vast corpus of children's literature, and Hindi translations of *Geet Govind, Meghdoot,* Vidyapati, besides some other books and authors from Gujarati and Bengali evince the other facets of this polyglot.

Among his other writings, mention must be made of *Dharmalok Shatakam* (a long poem in Sanskrit published in the Sinhalese script) and *Desha Dashakam*, etc., all in Sanskrit; *Paro, Balchanama*, and *Nav Turia* (novels), and *Chitra* (1949) and *Patraheen Nagna Gaachh* (1967), collections of poems in Maithili. Some of his Bengali poems

तीन खंडों में हैं।

नागार्जुन की कृतियों के अनुवाद भारतीय और विदेशी भाषाओं में प्रभूत मात्रा में हुए है।

काफ़ी पहले से वे एक महत्वपूर्ण लेखक माने जाते रहे हैं, लेकिन उन्हें प्रथम पुरस्कार अपने मैथिली कविता-संग्रह *पत्रहीन नग्न गाछ* के लिए 1969 में मिला। उसके बाद उन्हें ढेरों पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए।

1971 में वे तत्कालीन सोवियत संघ की यात्रा पर गए। बिहार, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल की सरकारों एवं अन्य संस्थाओं से क्रमश: उन्हें राजेन्द्र प्रसाद शिखर सम्मान (1993), भारत भारती पुरस्कार (1988), मैथिली शरण गुप्त सम्मान (1988), और प्रथम राहुल पुरस्कार (1992) जैसे पुरस्कार मिले। सच लेकिन यह है कि कठिनाइयों, संघर्षो और अदम्य आत्मिक साहसिकता से भरे उनके जीवन को लोगों से प्राप्त आदर-स्नेह में ही सच्ची संतुष्टि मिली है। नागार्जुन ने अपने पाण्डित्य, अभिनव प्रयोग, गंभीर सर्जनात्मकता, और विज्ञ आँखों में निरंतर कौंधनेवाली मेधा एवं हास से साहित्य-प्रेमियों के दिलो-दिमाग़ में स्थायी जगह बना ली है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, हिन्दी के यशस्वी कवि श्री नागार्जुन को साहित्य अकादेमी अपना सर्वोच्च सम्मान *महत्तर सदस्यता* प्रदान करती है।

have been included in his selected writings, published in three volumes.

Nagarjun has been widely translated into Indian and foreign languages. He has long been regarded as an eminent writer, but the first Award came to him in 1969 for his collection of poems in Maithili, *Patraheen Nagna Gaach* (The Leafless Naked Tree). Thereafter, many more awards and honours have been conferred on him.

In 1971, he travelled extensively in the then Soviet Union. The Governments and other institutions of Bihar, U.P., M.P., and West Bengal have bestowed prestigious prizes on him, such as, respectively, Rajendra Prasad Shikhar Samman (1993), Bharat Bharati Puraskar (1988), Maithili Sharan Gupta Samman (1988), and the first Rahul Puraskar (1992). His life, full of hardships, struggles and incessant spiritual adventure has found its real fulfilment in the love and respect the people have spontaneously given him.

Nagarjun has earned a permanent place in the hearts and minds of the lovers of literature, with his erudition, innovation and profound creativity and with his wit and humour ever sparkling in his wise eyes.

The Sahitya Akademi confers its highest honour, the *Fellowship*, on Shri Nagarjun for his creative eminence as a poet in Hindi.